

युग धर्म

परपीडन जिन को सुकृत हिंसन स्वसोपान
पौरुष धन वनिता हरण उद्यम नित अभियान।

बल संग्रह षड्यंत्र बहु छलरण कपटाचार
असहनीय पर की प्रगति प्रिय जिनको अपकार

पर साधन हरणादि पर आश्रित जिनके भोग।
प्राणी धरणी भारवत हैं केवल भव रोग।

क्षय साधन संग्रह निरत क्षिति कामी क्षयलीन ।
अधिकारी क्या क्षान्ति के क्षेमोच्छेद प्रवीण।

तिमिर वन्दिनी नित्य मति पाती अरति अमान।
ज्ञान रश्मि वारण निपुण निज वरता अभिमान।

इसके मूलोच्छेद हित सब साधन हैं मान्य।
अखिल जगत प्रभु तार्थ रत क्या अरि है सामान्य।
क्षोणी भृत जिनने दिया इन्हें क्षमा का दान।
प्राण सहित बैठे गंवा अचिर सकल धन मान।

रिपु बल अर्जन पूर्व ही है आघात विधेय।
उचित समय ज्ञाता सक्रिय पाता है जय श्रेय।

कण्टक शोधन युगों से राजनीति का तत्व।

रत जो नित अपकार में दर्शित बहु भ्रातृत्व।

द्रोही जन मर्दन अतः अब अवार्य युग धर्म।

घातक आज प्रमाद है अश्रवण निन्द्य विकर्म।

भोपाल

17.8.2022

शिव कुमार मिश्र